लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला - 38

आधुनिकं काव्यशास्त्रं

वागीश्वरीकण्ठसूत्रम्

(स्वोपज्ञवृत्ति - हिन्द्यनुवादसमेतम्)

प्रणेता
आचार्यहर्षदेवमाधवः

सम्पादकोऽनुवादकश्च
डॉ. प्रवीणपण्ड्या

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(मानितविश्वविद्यालयः)
नवदेहली

लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला — ३८

आधुनिकं काव्यशास्त्रं

वागीश्वरीकण्ठसूत्रम्

(स्वोपज्ञवृत्ति-हिन्द्यनुवादसमेतम्)

प्रणेता

आचार्यहर्षदेवमाधवः

सम्पादकोऽनुवादकश्च

डॉ. प्रवीणपण्ड्या

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)

नवदेहली

अनुक्रमणिका

क्र० सं०	विषय	पृ० सं०

प्रथमोऽध्यायः
(वाक्तत्त्वपद्मरागः)

१.	कविता-स्वरूपम्	१
२.	पराम्बायाः स्वरूपभेदाः	३
३.	कविमनोवृत्तिनिरूपणम्	१२
४.	अनुभूतिभेदनिरूपणम्	१४
५.	मैत्रीमुदितोपेक्षाणां त्रिगुणात्मकता	१७
६.	आशावादनिरूपणम्	२७

सात्त्विक मैत्री सुखमयी, राजसी मैत्री दु:खमयी और तामसी मैत्री मोहमयी है। वैसे ही करुणा, मुदिता और उपेक्षा भी सात्त्विक, राजसी और तामसी होने पर क्रमश: सुख, दु:ख मोह से युक्त होती है।

कवि मैत्री आदि की विविधता से भाव शबलता (भावों के इन्द्रधनुष) को साधकर रसनिष्पत्ति करने में समर्थ होता है।

सात्त्विक मैत्री जैसे -

राग को छोड़ चुके अधर से
और स्तन-अंगराग जैसी अरुणिम कन्दुक से विरत
अपने कुशांकुरों को लाने से घायल
हाथ को बनाया प्रणयी
पार्वती ने रुद्राक्षमाला का।

यहाँ हाथ की अक्षसूत्र के साथ मैत्री सात्त्विक है, क्योंकि वह संयम की साधक है। भर्तृहरि ने 'वाञ्छा सज्जनसंगमे' (नीतिशतक, ६२) में सात्त्विक मैत्री बताई है। राजसी मैत्री एक दूसरे के हितों की कामनाओं से युक्त, अन्तर्निहित प्रयोजन (with Hidden Agenda) वाली, अपनी इच्छा की संसाधक होती है। जैसे नारद पुरूरवा से कहते हैं-

''तुम्हारा काम वह करे और तुम उसका अभीष्ट साधो। सूरज अपने तेज से अग्नि को बढ़ाता है और अग्नि अपने से तेज सूरज को बढ़ाती है।''

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
56-57 इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
जनकपुरी, नवदेहली 110058

ISBN 978-93-86111-82-1